(२) पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा.....

पंखिडा ओऽऽऽ पंखिडा.....

पंखिड़ा रे उड़ के आओ कुण्डलपुर में;
तीर्थङ्कर जन्मे आज भरतक्षेत्र में ॥ टेक ॥

माता त्रिशला ने देखे थे सोलह सपने,
उनका फल बताया सिद्धार्थराज ने;
तेजवान बुद्धिमान लाल होएगा,
ज्ञानवान तीर्थङ्कर बाल होएगा ॥ 1 ॥

सिद्धार्थराज के द्वार बाजती बधाई है,
प्रथम दर्शन को शची इन्द्राणी आई है;
इन्द्र-इन्द्राणी आये आज नगर में,
खुशियाँ अपार छाईं नगर-नगर में ॥ 2 ॥

प्रभु आये यहाँ अच्युत विमान से,
यह बालक शोभित सम्यक्त्व रिद्धि से;
मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान है,
सम्यक्दर्शन ज्ञान रत्न भी महान है ॥ 3 ॥

प्रभु पूरी करेंगे यहाँ आत्म साधना,
अब धारण करेंगे कभी पुनर्जन्म ना;
वीतरागभाव से जिनराज बनेंगे,
चिदानन्द चैतन्यराज वरेंगे ॥ 4 ॥